जय सतनाम　　　　　　　　　　जय सतनाम　　　　　　　　　　जय सतनाम

(सतनामी संग्राम के **336** वर्ष बाद प्रथम)

<u>अखिल भारतीय सतनामी सम्मेलन</u>

<u>विषय</u> - सतनाम आन्दोलन का राष्ट्रीय एकीकरण एवं समाकलन – वर्तमान परिपेक्ष में
National integration & unification of Satnam Movement – in present scenario

स्थान ः– नेहरू सांस्कृतिक भवन सेक्टर **1** भिलाई. जिला दुर्ग (छत्तीसगढ़)

कार्यक्रम ः–

प्रथम प्रतिनीधि सत्र ः – दिनांक **27** अप्रेल **2008** रविवार समय **10** बजे सुबह से "परिचय सत्र"

द्वितीय प्रतिनीधि सत्र ः– दिनांक **27** अप्रेल **2008** समय **3** बजे अपरान्ह "सामाजिक परिचर्चा"

तृतीय प्रतिनीधि सत्र ः– दिनांक **28** अप्रेल **2008** सोमवार समय **10** बजे सुबह सामाजिक परिचर्चा लगातार व समायोजन तथा भविष्य की रूपरेखा व निष्कर्ष

चतुर्थ संवाददाता सत्र ः– दिनांक **28** अप्रेल **2008** समय **3** से **4** बजे अपरान्ह तक प्रेस कांफेंस

अंतिम खुला सत्र ः– दिनांक **28** अप्रेल **2008** समय संध्या **5** बजे से खुला सत्र (सतनाम भवन सेक्टर– **6** भिलाई – **6**)

प्रिय बन्धुगण

जय सतनाम,

यह सत्य है कि सत और असत की लड़ाई सृष्टि के साथ आदि काल से आज तक निरंतर जारी है और आगे भी जारी रहेगा। मानवीय चेतना के विकास के साथ ही सतनाम आन्दोलन का उद्‌भव भारतभूमि में एक समृद्ध व लोकप्रिय विचारधारा रहा है। आज सतनाम के मानने वाले पूरे भारत भूमि में करोडों की संख्या में है, पर ठोस अवलंब के अभाव में क्षेत्रीय रूप धारण किये हुए हैं तथा वैचारिक दृष्टि से सतनाम आन्दोलन आत्मशुद्धि, आत्मबोध व आत्मचिंतन का विषय बना हुआ है। इन सबके बावजूद सतनाम, कल्पना लोक रूढ़िवाद और अन्धविश्वास से परे व्यवहारिक जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। शायद ही कोई ऐसा सम्प्रदाय होगा जो सत के रास्ते से विमुख होना चाहेगा। राम, रहीम, ईसा, मूसा सबका मूल सत पर ही टिका हुआ मिलेगा। क्यों न हम डाल पत्तल के बदले मूल को धारण करें?

सतनाम आन्दोलन में विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय प्रभाव के कारण कुछ विकृतिया जरूर आयी पर अपने मूल स्वरूप से प्रादूषित नहीं हो पाया। धूल धुऑ कोहरा के छटते ही सतनाम की प्रकाशपुञ्ज निखर कर आयेगी। अध्ययन करने से पता चलता है कि आज भी सतनाम अन्ध–आस्था का विषय नहीं वरन मानवीय व्यवहार से जुड़ा हुआ श्रद्धामार्ग पर अविरल गति से चल रहा है। सतनाम इतना विकसित पथ है कि संकुचित विचारधारा वाले सांप्रदायिक लोग भी अब सतनाम, सत्संग, सन्मार्ग को अंगीकृत किये बिना अछूता नहीं रह सके है। आज कई संगठन व्यवहारिकता के आड़ में, सत्संग के नाम पर, अपनी अव्यवहारिक संकुचित विचारधारा, अंधविश्वास व रूढ़िवाद को फैलाने में लगे है जो मानवता के लिए दिन प्रति दिन खतरा बनते जा रहा है। भ्रम और भय का सिलसिला जारी आज भी है, जिन्हे हमारे सन्त गुरूओं अपने समयकाल में ने नकार दिया था। सद्‌भावना हमारा जीवन का अंग है। कुछ भी हो सतनाम में वह शक्ति है जो 'धरती पर रहते हुए परलोक का सपना देखने वालों

को जमीन की सच्चाई पर खींच लाती है।' जहॉ- जहॉ सतनाम का पदार्पण हुआ वहॉ - वहॉ क्रान्ति का बिगुल बजा है।

इतिहास आज भी साक्षी है कि सन्त बीरभान और जोगीदास की अगुआई में नारनौल का सतनामी संग्राम, औरंगजेब जैसे नृशंस शासक के लिए सबक रहा है। बाराबंकी का सतनाम आन्दोलन तत्कालिन रूढ़िवादियों का निशाना रहा है पर सतनामी सन्त जगजीवनदास डटे रहे और सरदहा के बदले कोटवाधाम से सतनाम आन्दोलन चलाये। छत्तीसगढ में सतनामी सन्त गुरू घासीदास का वैचारिक क्रान्ति अभियान व उनके सुपुत्र राजा गुरू बालकदास ज़ी का सतनाम आन्दोलन भी अनोखा रहा है। जनहित सतनाम आन्दोलन ने पेशवाई सामंती सामाज्य के विरूद्ध संघर्ष का शंखनाद कर करोड़ों दलित- शोषितों को मुक्ति दिलाई। आओ इस ऐतिहासिक सम्मेलन का हिस्सा बनकर नया इतिहास बनायें।

भारत भूमि में सतनाम के मानने वाले अलग अलग क्षेत्र में लम्बे समय तक बिखरे रहने के बावजूद वैचारिक एकरूपता है। रूढ़िवाद से जूझते हुए क्षेत्रीय वातावरण व परंपरा का प्रभाव के बावजूद सतनाम के मानने वाले अपनी स्वतंत्र पहचान बनाये हुए है और विशुद्ध सतनाम विचारधारा को जीवित रखने में संकल्पित हैं। यही हमारी शक्ति है और यही हमारा मिशन। सारे देश के सतनामियों को संगठित कर इसका लाभ लिया जा सकता है जो न केवल मध्य या उत्तर भारत बल्कि. पूरे देश व विश्व के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। सांप्रदायिकता में विभाजित वर्तमान भारत भूमि में सतनाम ही एक मात्र शांति, अहिंसा और निस्वार्थ प्रेम का संदेश है। भविष्य में भी सतनाम विचारधारा शोषण से मुक्ति दिलाते हुए, अखण्ड भारत की अक्षुणता बनाये रखने तथा एकता स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा।

हमे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि पुर्वाग्रह से गस्त संकीर्णमतावलंबी इतिहासकारों की लेखनी ने, सच्चाई पर परदा डालते हुए, सतनामियों के गौरवशाली मानवीय इतिहास को अकसर तोड़ मरोड़ कर पेश किया हैं। वहीं इन चाटुकारों ने छोटे -मोटे सूबेदारों को सरताज बनाकर पेश किया है। चाहे वह नारनौल की लड़ाई हो या कोटवाधाम की वैचारिक क्रान्ति अभियान या फिर छत्तीसगढ़ का सतनाम आन्दोलन हो, हर जगह इस अद्भूत विचारधारा को किनारा तथा तौहीन करने का प्रयास किया है। यहॉ तक सन्त कबीर के महान क्रान्तिकारी सतनाम आन्दोलन को भी भक्तिपथ में मोड़ कर असरहीन बनाने का भरपूर प्रयास किया है। मुफ्तखोर शोषक दानवों द्वारा शिक्षा के एकाधिकार का फायदा उठाते हुए, रूढ़िवाद और अन्धविश्वास के सहारे, अमरबेल की तरह जनता को चूसते हुए अपना उल्लू सीधा करता रहे। अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता जैसे भयानक संक्रामक रोग, मानव समाज को केवल विनाश की ओर ही ढकेलता है। केवल झूठी अहंकार और स्वार्थपरता के कारण देश व समाज विभाजित हुआ है। किसी भी राष्ट्र का निर्माण व विकास, सांप्रदायिकता, हिंसा व विभेद की आधारसिला पर संभव नहीं है। सतनाम क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद व सांप्रदायिकता से परे पवित्र चेतनमार्ग है जिसके कारण ही मानव समाज का रचना व विकास संभव हो सका है। आप अपने भीतर झांकें, निसन्देह अन्तर्मन की आवाज, सतनाम अपने आप में विकासपथ व निर्वाणपथ है।

यह विश्व विदित है कि सतनाम विचारधारा असत से लड़ते हुए आदिकाल से चला आ रहा है पर पिछले पांच- छै सौ साल में प्रगाढ़ता आई है। सतनामियों की संख्या पूरे भारत में करोड़ों में है। हर भारतवासी जो सत (अर्थात प्रेम दया, करूणा, क्षमा, विनय और शील) के रास्ते पर चलता है, सतनामी है। अतः भारत भर के बिखरे सतनामियों को इकट्ठा करना एक साहसिक पहल ही नहीं वरन एतिहासिक प्रयास है। यदि हम इस मिशन में कामयाब होते हैं तो मानवतावादी सतनामियों का जो अवमूल्यन हुआ है उसे पुन हासिल किया जा सकता है। इस सम्मेलन का यह प्रमाणित करना एक उद्देश्य है कि सतनामी कोई जाति नहीं वरन सतनाम आधारित एक

विशुद्ध विचारधारा व सहज जीवनशैली है जो जनसाधारण व मानव समाज के लिए उपयोगी है। सन्तों की महान कृति है। हमें अपने बंधनों को स्वयं तोड़ना होगा। आओ मानवता के हित में सतनाम को अंगीकृत करते हुए हम सब पास -पास आयें और भाईचारा बनाते हुए आपस में गले मिलें। यही दानवता पर मानवता की बिजय होगी। हमें दानवी इतिहास से मुक्ति पाने व जन मानस को सच्चाई से अवगत कराने हेतु, अपनी मानवी इतिहास खुद लिखनी होगी जिसे हमारे अराधनीय सन्त महापुरूषों ने अपने बाणियों में संजोये रखा है।

गुरू बालकदास के कुर्बानी को अब याद करने का वक्त आ गया है। असत का पर्दाफास करते हुए जनहित में सतनाम आन्दोलन को पुनः पटरी पर वापस लाना ही होगा, चाहे हमें इसके लिए कुछ भी कुर्बानी देना पड़े। हमारा मिशन है कि सतनाम का परचम हर भारतवासी के घर पर लहराये ताकि सभी सहज व सरल तरीके से सुख और शांति के साथ मिल जुल कर प्रेम व भाईचारा से जीवन बसर कर सकें।

इस कार्यक्रम को मूर्त रूप देने के लिए अखिल भारत स्तर पर उनके सहमति के अनुरूप एक आयोजन समिति का गठन किया गया है। कार्यक्रम में प्रतिनीधियों को सफेद वस्त्र धारण करने का सुझाव दिया गया है। आयोजन समिति के सदस्यों से नाम व पता नीचे दिये गये हैं।

क्र	नाम	पता	फोन नं.
1	श्री टी आर खुंटे दिल्ली	जी 234ए सेक्टर 22 नोएडा 201301	09868390962
2	श्री नरेन्द्रशाह दिल्ली	124 कैलाश हील (इस्ट आफ कैलाश) नई दिल्ली	09810057608
3	श्री विजय फुल इरोड	सतनामी नारनौल शाखा	09342620340
4	श्री प्रेम फुल दिल्ली	सतनमी नारनौल शाखा	09891265201
5	श्री कमलेश दास	बाराबंकी सतनामी कोटवा धाम शाखा	09450742705
6	महंत हरिप्रताप दास	बाराबंकी सतनामी कोटवा धाम शाखा	09335758288
7	श्री सुरेश चंद	रूकनपुर गददी सतनामी सबला पंथी	09412733965
8	महंत बासुदेव दास छपरा	बिहार कोटवाधम शाखा	06152 232053
9	महंत अनिरूद्ध दास	जमशेदपुर झारखण्ड कोटवाधाम	09431753453
10	रामेश्वर पाटले	सतनामी मुम्बई	022 28410452
11	रामनाथ भैया लाल गेन्ड्रे	सतनामी नागपुर	07109286007
12	श्री चुन्नी लाल मिरजा	अधिकारीगुडा उडीसा	09937663564
13	श्री ज्योति लाल बंजारे	राजाखरियार . जिला नयापारा ऊडीसा	09938552477
14	श्री डीएल दिव्यकार जसपुरनगर	सतनामी छत्तीस गढ शाखा	09329440092
15	श्री टी आर मिरे कोरबा	सतनामी छत्तीस गढ शाखा	09827113258
16	श्री एल एल कोशल बिलासपुर	सतनामी छत्तीस गढ शाखा	09425543840
17	श्री नरसिंह मंडल रायपुर	सतनामी छत्तीस गढ शाखा	0771 2887540
18	श्री एफ आर जनार्दन भिलाई	सतनामी छत्तीस गढ शाखा	09907182554
19	डॉ देव नारायण बचेली बस्तर	सतनामी छत्तीस गढ शाखा	07857 255896
20	श्री दिनेश साध मुम्बई	सतनामी नारनौल शाखा	09320111012
21	श्री नवरतन साध बांस बरेली	बीजामऊ फरूखाबाद 9313779928	05825- 227013

हमने इस ऐतिहासिक कार्य के लिए उपयुक्त माहौल के कारण स्पातनगरी भिलाई को चुना है। सतनामी मिलन समारोह की तिथी **27** व **28** अप्रेल **08** निर्धारित की गई है। आओ भारत भूमि को हम सब मिल कर सतनाम मय बनायें। यही हमारे गुरूओं की सच्ची सेवा व श्रद्धा होगी।

चर्चा का विषय ः सतनाम आन्दोलन का राष्ट्रीय एकीकरण व समाकलन

(National Integration and Unification of Satnam Movement)

1. सम्पूर्ण भारतभूमि में सतनाम आन्दोलन से जुड़े लोगों को, भले ही वे अपने क्षेत्र में क्षेत्रीय प्रभाव के कारण अलग अलग तरीके से मान्यतायें मानते हो उन सबको एक मंच पर एक साथ पास पास लाना।

   (Bringing together in one platform all the followers of Satnam movement in different part of India irrespective of methodology being followed by them.)
2. सतनाम के पुरोधा सन्त व गुरूओं का क्रमबद्ध सूचीकरण तथा उनके आन्दोलन का स्वरूप और प्रभाव का संकलन कर, एक योजनाबद्ध तरीके से सतनाम आन्दोलन को पूरे भारत में फैलाना ताकि सम्पूर्ण मानव समाज को इसका लाभ मिल सके।

   (For National integration of Satnam movement, chronologically listing related sants/ Gurus collecting their detail about ideology and methodology followed to spread Satnam mission.)
3. सतनान आन्दोलन के समान विचारधाराओं का संकलन (Common thoughts of Satnam movement.).
4. सतनाम आन्दोलन को एकीकरण हेतु भारत के विभिन्न राज्यों में सम्मेलन व विचार गोष्टी अभियान चलाना।

   (Organizing symposium for unification in different part of India.)
5. सतनाम आन्दोलन का एकीकरण हेतु अखिल भारतीय सतनाम महासभा का गठन।

   (Formation of National forum for unification of Satnam movement.)
6. सतनाम आन्दोलन में व्यवहारिकता एवं गतिशीलता के सिद्धान्त को सहज और सरल तरीके से परिभाषित करना।

   (Dynamics of applied Satnam its theory and practices)
7. सतनाम मिशन के लिए आर्थिक सहयोग। (Funding of Satnam movement and mission)

विनीत
आयोजन समिति
अखिल भारतीय सतनामी सम्मेलन
भिलाई नगर दुर्ग छ ग

प्रति कु/ श्री मान /श्री मती ,,,,,,,,, ,.,,,,

<u>सहमति पत्र</u>

मैं उपरोक्त कार्यकम में सम्मिलित होना चाहता / चाहती हूँ। मेरा / मेरी विवरण निम्न है । मै कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सहयेग राशि **तीन सौ रूपये** मात्र दे रहा हॅू।

1 नाम	**2** पिता / पति का नाम
3 जन्म तिथि	**4** शैक्षणिक योग्यता
5 व्यवसाय	**6** पता
7 फोन मोबाइल नं	**8** ई मेल पता

नोट ः कृपया अपना सहमति पत्र या तो शाखा संयोजक को **20** अप्रेल **08** तक भेजे अथवा श्री टी आर खुन्टे को उपरोक्त पते पर दिनांक **25** अप्रेल **08** तक अवश्य भेजे ताकि व्यवस्था में सुविधा हो सके।